12.01 hrs.

CALLING ATTENTION TO A MATTER OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE

(i) Reported Proposed visit of Phizo to China

Mr. Speaker: Now, we shall take up the calling attention notice. Shri Hukam Chand Kachhavaiya.

श्री रामेश्वरानन्द (करनाल) : अध्यक्ष महोदय, मुझे प्रश्न संख्या 800 पर एक प्रश्न पूछ लेने दिया जाय मैं बड़ी देर से इस के लिए खड़ा हो रहा हूं ।

अध्यक्ष महोदय : स्वामी जी अब नहीं हो सकता मैं आगे चला गया हूं ।

श्री रामेश्वरानन्द : मैं बड़ी देर से खड़ा होता रहा हूं. . . .

अध्यक्ष महोदय : मुझे अफसोस है ।

श्री रामेश्वरानन्द : मैं एक व्यवस्था का प्रश्न उठाना चाहता हूं ।

अध्यक्ष महोदय : इस में व्यवस्था का क्या प्रश्न है ?

श्री रामेश्वरानन्द : मैं आप का ध्यान इस ओर दिलाना चाहता हूं कि जिस श्रेणी के छात्रों को अंग्रेज़ी का अध्यापक पढ़ता है और उसी श्रेणी के छात्रों को जो अध्यापक संस्कृत पढ़ाता है उन दोनों अध्यापकों के वेतन में फर्क होता है और अंग्रेज़ी पढ़ाने वाले अध्यापक को संस्कृत पढ़ाने वाले अध्यापक की अपेक्षा डेढ़ गुना और दुगुना वेतन मिलता है तो मैं आप से यह जानना चाहता हूं कि संस्कृत पढ़ाने वाले अध्यापक को अंग्रजी के अध्यापक के मुकाबले वेतन इतना कम क्यों मिलता है ? इस में आप की क्या व्यवस्था है ?

अध्यक्ष महोदय : श्री हुकम चन्द कछवाय ।

श्री हुकम चन्द कछवाय (देवास) : मैं अविलम्बनीय लोक महत्व के निम्नलिखित विषय की ओर वैदेशिक-कार्य मंत्री का ध्यान दिलाता हूं और प्रार्थना करता हूं कि वह इस बारे में एक वक्तव्य दें :—

"श्री ए० ड ा० फिज़ो की चीन की प्रस्तावित यात्रा के समाचार तथा उस पर भारत सरकार की प्रतिक्रिया ।"

The Minister of External Affairs (Shri Swaran Singh): The report in the Indian Press is based on a news item from the London correspondent of the "Dawn" of Karachi.

Mr. Phizo has been in England since 1960. He has opted for and been given British citizenship.

Our reports indicate that he has received no encouragement in England in recent months from official quarters in his agitation for the so-called independence of Nagaland.

Whether Mr. Phizo will be allowed to go to Peking is a matter for the British Government to decide, since he is now a British national.

We would not be in favour of a British national being given facilities for travel to indulge in activities which are against the interests of our country.

श्री हुकम चन्द कछवाय : मैं जानना चाहता हूं कि इस समय श्री फ़िज़ो कहां पर हैं और वह नागालैंड में आते हैं या नहीं ? दूसरे यह जो शांति वार्त्ता हो रही है उस का उन के मन पर क्या असर पड़ा है ?

Shri Swaran Singh: He does not come to Nagaland. He is in England, as I have already stated. As to what the effect of the peace talks on his mind is, I have no information.

Shri Daji (Indore): Get him psycho-analysed.

श्री यशपाल सिंह (कैराना) : क्या यह बात सही है कि अपनी चीन और पाकिस्तान की विजिट से मि० फ़िज़ो इस

शांति वार्त्ता में देर करा रहे हैं और नागालैंड का कोई मसला इस वजह से तय नहीं हो पाता है कि पादरी स्काट के मार्फत वह चीज़ पहुंचती है और मि० फ़िज़ो नहीं चाहते हैं कि शान्ति से बैठा जा सके तो सरकार इस मामले में क्या कर रही है ?

Shri Swaran Singh: The general question of the peace talks that are going on in Nagaland is a matter which has been discussed here more than once. That does not arise out of this calling-attention-notice at all.

Shri S. M. Banerjee (Kanpur): The hon. Minister has expressed the anxiety of our Government not to allow Shri Phizo to go to China. Since India is a member of the Commonwealth, may I know whether the Government of India will make a request to the Government of the United Kingdom to see that Shri Phizo does not get a passport for China because that will aggravate the situation and would be damaging to India, and whether Brigadier Sen who is one of the officers....

Mr. Speaker: The hon. Member should be satisfied with one question....

Shri S. M. Banerjee: That is connected with this question.

Mr. Speaker: So many questions should not be clubbed together.

Shri S. M. Banerjee: May I know whether Brigadier Sen, the Advocate-General of Nagaland, has been sent specially to England and one of his assignments is to see Shri Phizo in this connection?

Shri Swaran Singh: We have asked our High Commissioner in London to convey our views in this respect to Her Majesty's Government. He will certainly do that.

I have no information of the deputation of Brig. Sen. But I can say that there is no question of his going to see Phizo in any form on our behalf. He has nothing to do with Phizo.

Shri Daji: In view of the well-known hostile nature of Phizo's activities, which will be multiplied if he goes to China, and in view of the fact that alreadly there is a lot of wrong anti-Indian propaganda about Nagaland going on—Dawn had put it on its front page that napalm bombs were used by us in Nagaland; this was mentioned in the House—have Government made it clear to the Governments of U.K. and China that Phizo is *persona non grata* with us and any such facilities given to him to go to China would be treated as an unfriendly act towards India?

Shri Swaran Singh: I agree with the hon. Member that a lot of wrong propaganda is being carried on. It is entirely incorrect to say that napalm bomb was used in any part of Nagaland. That is a story which is entirely incorrect and I would like to repudiate it very strongly. It was never used and any suggestion to that effect is absolutely incorrect. I am glad that the hon. Member mentioned it, giving me an opportunity to state the facts.

I have already said that we have asked our High Commissioner in London to clearly tell the U.K. Government that we are totally opposed to it and that they should not permit a British national to undertake an activity which is against our interest.

श्री बागड़ी (हिसार) : फ़िज़ो की गतिविधियां हमारे भारत देश की प्रतिष्ठा और स्वाधीनता के विरुद्ध जाती हैं क्योंकि फिजो चीन जाने की सोच रहे हैं, वह चीन जो कि हमारा दुश्मन मुल्क है . . .

अध्यक्ष महोदय : आप तो यह भूमिका और लेक्चर देने लग गये, जो सवाल करना हो वह आप करें ।

श्री बागड़ी : मैं सवाल ही करने जा रहा था लेकिन उस से पहले मैं उसकी थोड़ी सी पृष्ठभूमि बतलाना चाहता था लेकिन आप उस की इजाजत मुझे नहीं दे रहे हैं ।

अध्यक्ष महोदय : अगर कोई सवाल करना हो तो आप उसे करें ।

श्री बागड़ी : और लोगों को आप इस तरह से पृष्ठभूमि समझाने की इजाजत दे देते हैं लेकिन मुझे नहीं दे रहे हैं । खैर मैं फिर सवाल ही करे लेता हूं । चाइना फ़िज़ो और शेख को जोकि हिन्दुस्तान के मुखालिफ़ तत्व हैं उनका इस्तेमाल वह हिन्दुस्तान के खिलाफ प्रचार के लिए करना चाहता है तो क्या हमारी भारत सरकार भी ऐसे तत्वों का सहयोग लेने का विचार रखती है, दलाई लामा या कुछ ऐसे तत्व जिनका कि चीन के खिलाफ़ इस्तेमाल हो सकता है और विदेशों में यह तत्व जा कर चीन के विरुद्ध प्रचार कर सकते हैं ? अगर खुद भारत सरकार चीन का विदेशों में विरोध नहीं कर सकती तो वह दलाई लामा को थाईलैंड या अमरीका वगैरह में भेज कर उनका इस्तेमाल चीन के विरुद्ध कर सकती है या नहीं ?

अध्यक्ष महोदय : अब बागड़ी साहब इस सवाल का गवर्नमेंट से मैं क्या जवाब देने को कहूं ? अगर गवर्नमेंट ने ऐसा करना भी हो तो भी उसको नहीं चाहिये कि वह उस तरह का जवाब दे । आप कहते हैं कि गवर्नमेंट कहे कि वह इस बात में क्या करेगी , ऐसा पूछना मुनासिब नहीं है । आप ज़रा इस बारे में गहराई से सोचिये ।

श्री बागड़ी : अध्यक्ष महोदय, मेरा एक व्यवस्था का प्रश्न है । अब यह कोई फ़िज़ो का सवाल तो है नहीं । फ़िज़ो तो लंदन में बैठा है लेकिन चीन तो हमारा दुश्मन मुल्क है और वह जब उनका इस्तेमाल करता है तब वह हमारे लिये आपत्तिजनक और ख़तरनाक बात होती है . . . .

अध्यक्ष महोदय : क्या बागड़ी साहब चाहते हैं कि गवर्नमेंट यहां उन्हें बतलाये कि हम फलां फलां आदमियों को चीन के बरखिलाफ़ एक एजेंट बना कर इस्तेमाल करेंगे ? क्या गवर्नमेंट का यह बतलाना कि वह उन से म ा यह काम करायेंगे देश हित में होगा ? श्री प्र० चं० बरुआ ।

डा० राम मनोहर लोहिया (फर्रुखाबाद) : अध्यक्ष महोदय, मेरा एक व्यवस्था का सवाल है । मैं आप को याद दिलाता चाहता हूं कि आप ने खुद यहां कई बार फ़रमाया है कि ध्यानाकर्षण प्रस्ताव किसी हद तक काम रोको प्रस्ताव का भी काम करता है काम रोको प्रस्ताव यहां पर आने नहीं दिया जाता है तो जो कुछ सरकार की नीति की कमियां हैं उन को ध्यानाकर्षण प्रस्ताव के द्वारा भी लाया जा सकता है यह आप ने खुद यहां पर कई बार फ़रमाया है तो इस चीन वाले मामले में कांग्रेस सरकार की बहुत बड़ी कमियां नीति की रही हैं ।

अध्यक्ष महोदय : अब उन ख़ामियों की बहस तो इस वक्त नहीं हो सकती है ।

डा० राम मनोहर लोहिया : मैं खुद आप की बात आप को याद दिला रहा हूं ।

अध्यक्ष महोदय : मुझे बहुत अच्छी तरह से याद है कि मैंने क्या बात कही है ।

डा० राम मनोहर लोहिया : ध्यानआकर्षण में शेख अब्दुल्ला अथवा श्री फ़िज़ो का सवाल उठता है, तो चीन के सम्बन्ध में सवाल उठ जाना बहुत लाज़िमी हो जाता है । आप ने दलाई लामा के बारे में जो फ़रमाया, अगर वह व्यंग्य के तौर पर

था, तो अलग बात है, लेकिन अगर असलियत और नीति का सवाल है, तो इस में कोई शक नहीं है कि एक तरफ़ पीकिंग और ताइपेह में जो बैर चल रहा है और दूसरी तरफ पीकिंग और तिब्बत में जो बैर चल रहा है, इन दोनों बैरों के मामले में हिन्द सरकार की नीति बड़ी खराब रही है। अगर ध्यान-आकर्षण प्रस्ताव में नीति का सवाल पूछ कर के इस सवाल को नहीं ला सकते, तो आखिर उस का मतलब क्या रह जाता है ? ये दोनों नीतियां सामने आनी चाहिये और उस पर सरकार को अपनी राय बतानी चाहिये—या तो यह कि अब तक जो पुरानी राय रही है, वह उस पर चलना चाहती है या वह उस राय को बदलना चाहती है । तो इस सम्बन्ध में जब तक हमारे सामने यह बात नहीं आयेगी, तब तक किसी न किसी रूप में श्री अब्दुल्ला का, श्री फ़िजो का या और कोई सवाल उठता रहेगा । और मैं यहां पर बिल्कुल साफ़ कह देना चाहता हूं कि केवल हिन्दुस्तान के स्वार्थ की बात मैं नहीं कर रहा हूं . . .

Shri Raghunath Singh (Varanasi): This is practically a short speech.

Shri Frank Anthony (Nominated—Anglo-Indians): Long speech.

डा० राम मनोहर लोहिया : बल्कि इस में स्वार्थ और सिद्धान्त दोनों हैं । हिन्दुस्तान की सरकार ने चूंकि सिद्धान्तको छोड़ दिया है, (*Interruptions*). इस लिए स्वार्थ के मामले को बार-बार उठाना पड़ता है । (*Interruptions*). इसलिये हम को सिद्धान्त और स्वार्थ, इन दोनों पहलुओं पर विचार करना चाहिये ।

Shri Raghunath Singh: This is practically a speech.

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्य को दोबारा शुरू करने दीजिये ।

डा० राम मनोहर लोहिया : मैं कर सकता हूं ।

अध्यक्ष महोदय : आप नहीं कर सकते ।

डा० राम मनोहर लोहिया : क्या यह कोई तरीका है कि जब मैं कोई सवाल उठाता हूं, तब कांग्रेस वाले व्यवस्था का प्रश्न खत्म नहीं होने देते और बीच में टोकने लगते हैं ? आप मुझे रोक सकते हैं, लेकिन दूसरों को ऐसा करने का क्या अधिकार है ? (*Interruptions*).

अध्यक्ष महोदय : लेकिन वह व्यवस्था का प्रश्न कब तक चलेगा ? मैंने आपको सवाल करने की इजाजत नहीं दी थी । आप व्यवस्था का प्रश्न उठाना चाहते थे और आप ने इतना कह लिया है । इस में कोई व्यवस्था का प्रश्न नहीं उठता है । अब आप बैठ जायें, ताकि मैं आगे चल सकूं ।

डा० राम मनोहर लोहिया : ठीक है, श्री रघुनाथ सिंह अपनी खैरख्वाही करते रहें ।

Shri P. C. Borooah (Sibsagar): Although Mr. Phizo has changed his Indian nationality and embraced British nationality, he has been described as the President of the Naga National Council in statements of the underground Nagas. (*Interruptions*).

अध्यक्ष महोदय : क्या मैं उधर से दूसरी स्पीच भी सुनता रहूं? क्या मैं एक को सुनूं या दो को सुनूं ?

डा० राम मनोहर लोहिया : अध्यक्ष महोदय, माफ़ कीजिये ।

Shri P. C. Borooah: He is directing these activities from a country like U.K. which is the leader of the commonwealth of Nations. May I know whether mere change of nationality prevents our Government from taking any action against his nefarious activities?

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्य सवाल करें। हर एक मेम्बर साहब को कहना पड़ता है कि वह सीधा सवाल करे।

Shri P. C. Borooah: Yes, I have finished.

Shri Swaran Singh: In the statement that I made, I have said that he has not been receiving any encouragement from the U.K. Government with regard his activities.

Shri Ranga (Chittoor): In recent months.

Shri Swaran Singh: The hon. Member said he was directing the activities from London. Our information is that the hostile leaders who are now functioning in Nagaland themselves are doing whatever they want. They are indulging in objectionable activities, but there is not much evidence that Phizo is directing their activities.

Shri P. C. Borooah: He is described as the President of the Naga National Council in statements of the underground Nagas.

Mr. Speaker: A part has been answered. I will not allow the whole thing to be answered.

Shrimati Savitri Nigam (Banda): In view of the fact that our hopes of success in our negotiations with the Naga rebels have been dependent on the efforts of the peace mission, in this new situation when Mr. Phizo has declared openly that he is indulging in anti-national activities, I want to know whether Government is intending to change the policy or whether it is still depending on the peaceful negotiations of the peace mission?

Mr. Speaker: Has he followed it?

Shri Swaran Singh: I may be permitted to say that we have no intention to change the policy which, fortunately, has received the support of the Members of Parliament of both the Houses who visited those places and made their reports.

श्री मधु लिमये : (मुंगेर) : फ़िलहाल फ़िज़ो ने एक वक्तव्य प्रकाशित किया था, जिसमें उन्होंने इस बात का स्वागत किया था कि चीन ने काश्मीर के स्वयं-निर्णय के अधिकार को मान लिया है और शेख़ अब्दुल्ला को चीन में जाने के लिए न्योता दिया है। फ़िज़ो ने इस वक्तव्य में यह आशा प्रकट की है कि चीन नागा प्रदेश के स्वयं-निर्माण के अधिकार को भी मान लेगा और उनको भी चीन आने के लिए दावत दे देगा। मेरा प्रश्न इस स्वयं निर्णय के सम्बन्ध में है। कच्छ से लेकर नागा प्रदेश तक हमारी सीमा पर आज फ़ौजी और वैचारिक हमला भी हो रहा है। इसलिए यह स्वयं-निनर्णय का तत्व हिन्दुस्तान के एक एक हिस्से को भारत से अलग करने के लिए इस्तेमाल में लाया जाता है। जहां एक ओर चीन, मंगोल, तिब्बती और तुर्की जनता की आज़ादी को छीन रहा है या छीनने का इरादा रखता है, दूसरी ओर हिन्दुस्तान के एक एक..........

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्य अब सवाल करें।

श्री मधु लिमये : अध्यक्ष महोदय, यह भूमिका है। मैं बहुत संक्षेप में कह रहा हूं। मैं दूसरे लोगों से बहुत कम समय ले रहा हूं। अब मेरा प्रश्न आ रहा है। इस तरह आप बीच में हम को न रोकें।

स्वयं-निर्णय के नाम पर चीन हमारे देश के एक एक हिस्से को देश से अलग करने का और राष्ट्रीय एकता को तोड़ने का प्रयास कर रहा है । मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या सरकार चीन के इस वैचारिक और फ़ौजी आक्रमण का कोई ठोस और मुकम्मल जवाब देगी या उसकी अपनी जो वर्तमान नपुंसक नीति है, उसको ही चलायेगी । यह मेरा प्रश्न है ।

Shri Swaran Singh: It is wrong for him to use such adjectives with regard to this policy and I take strong objection for using such expression.

Mr. Speaker: I agree.

श्री मधु लिमये : मैं उस का पुनरुच्चारण कर रहा हूं कि आप की नीति बिल्कुल नपुंसक नीति है । (*Interruptions*).

अध्यक्ष महोदय : आर्डर, आर्डर ।

एक माननीय सदस्य : इसको एक्सपंज कर दिया जाये ।

श्री मधु लिमये : एक्सपंज करने का सवाल है ? यह शब्द कोई असंसदीय थोड़े ही है । (*Interruptions*).

अध्यक्ष महोदय : आर्डर, आर्डर । अब क्या आप जवाब सुनेंगे ?

श्री मधु लिमये : सुनेंगे ।

अध्यक्ष महोदय : अगर सुनेंगे, तो आप आराम से बैठ जाइये । जवाब सुनिये ।

12.18 hrs.

SUSPENSION OF MEMBER
(Shri Madhu Limaye)

Shri Raghunath Singh (Varanasi): The word 'napumsak' should be expunged.

Shri Khadilkar (Khed): May I ask one question? Will it be proper to use that expression?

श्री हुकम चन्द कछवाय : (देवास) : ठीक है, यह बिल्कुल ठीक शब्द है ।

श्री मधु लिमये : (मुंगेर) : आप उस नपुंसक नीति के प्रतीक हैं । आप बैठ जाइये । (*Interruption*). मैं जवाब सुन रहा हूं ।

अध्यक्ष महोदय : मैं हर रोज़ कहता रहता हूं कि यह मेम्बर साहब, श्री मधु लिमये, हर वक्त प्रोसीडिंग्ज को आवस्ट्रक्ट करने की कोशिश करते हैं और मैंने इन से इस बारे में दो तीन दफ़ा कहा है कि यह एक दिन की कार्यवाही नहीं है, यह हर रोज़ की कार्यवाही है । वह कार्यवाही को इस तरह रोक कर बन्द रखते हैं कि हम को आगे नहीं जाने देते हैं । मैं इसकी इजाजत नहीं दे सकता । मैं चाहूंगा कि हाउस इस पर कोई एक्शन ले । मैं इस तरह से नहीं चल सकता हूं । इस वक्त मैं इनका नाम ले कर, पुकार कर, कहता हूं कि वह बाहर चले जायें ।

श्री किशन पटनायक (सम्बलपुर) : यह कैसे हो सकता है ।

श्री मधु लिमये : मैं चला जाऊंगा आपकी आज्ञा मानूंगा, लेकिन मुझे एक अर्ज़ करने दीजिये ।

अध्यक्ष महोदय : अब आप चले जाइये ।

श्री मधु लिमये : मैं तो दखल नहीं दे रहा खाडिलकर जी दे रहे थे । मैं तो जबाब सुन रहा था ।

अध्यक्ष महोदय : अब आप चले जाइये ।

श्री किशन पटनायक: इस तरह की बाधा दूसरे लोग भी दिया करते हैं और हर रोज़ दिया करते हैं, लेकिन यह एक्शन की बात हमारे ऊपर क्यों आ जाती है ? यह बात हमेशा हुआ करती है ।